RNI NO. DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | MAY 2015 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

Tecnia Sports Meet 2015

Saturday, 2 May 2015

Sports actually means the physical activities that people love to participate and enjoy plus it also makes them healthy in the process. People who want to involve in sports should try to be organized, skillful and should also be committed to fair play. People usually indulge in sports activities for fun and to get the physical exercise that they need to stay healthy.

Tecnia organized sports meet 2015 for all the students of Tecnia. Students of all the courses MBA, MCA, BBA and BJMC took part in the outdoor and indoor sports. Total of 196 students participated in the various events. There were three sports organized Cricket, Chess, Carrom. Cricket was organized in District Park Sec -14, Rohini, Delhi. Chess and Carrom were organized in the multipurpose hall of Tecnia Institute of Advanced Studies.

The inauguration of the Tecnia Sports Meet 2015 was done by Mr. Rahul Mittal, Convener and Mr. Rahul Tripathi, Co-convener. The inauguration was done by delivering a ball and hitting it with the bat.

In total 9 teams from all the courses constituting 110 students participated. Form BJMC 3 teams, two team each from MBA and MCA, 1 team from BBA and one team from rest of the college took part in the event. First match was started at 7:15 AM. All the matches were on knockout basis. In the final match MBA 2nd Sem defeated MBA 2nd Sem by 10 wickets. Ravi was adjudged man of the series by the panel of umpires.

Shubham Goswami and Shikhar Srivastava were the organizers of the event and they took all the initiatives for the success of the event. Shubham Goswami done scoring in all the matches. Mr. Rahul Mittal and Mr. Rahul Tripathi have done umpiring in all the matches.

56 students participated of 28 teams took part in Carrom tournament. All the matches were played on Black & White game. This tournament was also played on knockout

basis and for one game each. The final match was played on best of three games and was played between Saurav and Peeyush Vs. Satish and Kshitiz. Team of Saurav and Peeyush defeated the team of Satish and Kshitiz by 2-0 in straight sets.

Sachin Mann and Akash Chawla play a major role in organizing the event and took all the initiatives for the success of the event. They do scoring in all the matches. Mr. Rahul Mittal and Mr. Rahul Tripathi have done umpiring in all the matches.

Chess

30 students from various departments participated in the chess championship. All the matches were on knockout basis. In the final encounter Surya Bhushan Kumar from MCA defeated Ankit Gupta from MCA 2nd Sem in just 25 moves. The final match was played in Rapid Chess format in which total of 30 seconds was given for one move and 10 seconds increment was given on each move from the very first move. Champion Surya Bhushan and the runner up Ankit took almost 15 seconds for a move.

Shubham Goswami, Shikhar Srivastava, Sachin Mann, Divyanshu and Akash Chawla play a major role in organizing the event and took all the initiatives for the success of the event. They all have done time keeping in all the matches. Mr. Rahul Mittal and Mr. Rahul Tripathi have done umpiring in all the matches.

The prize distribution of Tecnia Sports Meet 2015 held on 8/05/2015. The certificates and trophies were distributed by Dr. Ajay Kumar, Director TIAS; Rahul Mittal, Convener Tecnia Sports Meet 2015 and Mr. Rahul Tripathi, Convener Tecnia Sports Meet 2015. All the participants were overwhelmed. Achievement:

Surya Bhusan Kumar, student of MCA 2 E becomes an International Chess Player. He got 3 points in FIDE Ratings. He participated in Dr. Hedgewar Chess Tournament held at Thyagraj Stadium from 27th April 2015 to 1st May 2015.

The students learnt team spirit. They learnt the sweet fruit of success as well as bitter fruit of failure. They learnt how to be organized, skillful and be committed to fair play. The students have great fun and learnt how to get the physical exercise that they need to stay healthy.

Rahul Mittal

बढ़ते तनाव का नतीजा हैं "रोड रेज" की घटनाएँ

भारतीय सड़कों पर बढ़ रहे रोड़ रेज ने आम आदमी की सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। रोड़ रेज ने लोगों की जिंदगी को खतरे में डाल दिया हैं। लेटलतीफी और अनुशासनहीनता इस समस्या की मूल जड़ है। वहीं काम का बोझ भी लोगों का तनाव बढ़ा रहा है। जिसका खामियाजा रोड़ पर चलता बेकसूर आदमी भुगतता है। बढ़ती आबादी और गाडि□यों की बढ़ी संख्या से सड़कें अब छोटी लगने लगी हैं। सड़क पर चलना ऐसा लगता हैं, मानों डब्बे में चल रहे हैं। सड़क पर चलते समय हम किसी भी तरह की रियायत बरतने को तैयार नहीं होते। सड़कों पर ट्रैफिक के दबाव और आगे निकलने की होड़ चिड़चिड़ापन पैदा करती है। इसका गुस्सा सड़क पर ऐसे लोगों पर निकलता हैं, जिनसे छोटी गलती हो जाती है। नतीजा बहस से शुरू हुआ विवाद हाथापाई से होते हुए जानलेवा हमले तक पहुंच जाता है।

पिछले दिनों दिल्ली की सड़कों पर ऐसी ही एक घटना घटी। गाड़ी में जरा सी खरोंच लगने पर ही मासूम बच्ची के सामने ही उसके पिता की हत्या कर दी गई। आए दिन दिल्ली की सड़कों पर ऐसी वारदातें देखने को मिलती हैं। दिन–ब–दिन गाडि□यों की बढ़ती संख्या ट्रैफिक का दबाव बढ़ा रही है। भारतीय सड़कों पर ट्रैफिक जाम सामान्य बात हो गई है। भारत में लगभग 80 हजार लोग हर साल दुर्घटना में मारे जाते हैं। लोगों का काफी समय सड़कों पर ट्रैफिक जाम में निकल जाता है। ऐसे में हर किसी को घर–दफ्तर जल्दी जाने या अपनी मंजिल पर पहुंचने की जल्दी होती है। नतीजा पहले बहस होती है फिर हाथापाई।

पिछले दशक में 212 प्रतिशत गाडियां सड़कों पर बढ़ी हैं उसके मुकाबले सड़कें सिर्फ 17 फीसदी ही बढ़ी हैं। ऐसे में ट्रैफिक जाम होना स्वाभाविक है। बढ़ती संपन्नता ने लोगों को विलासिता की ओर धकेल दिया है। आज गाड़ी खरीदना और रखना संपन्नता का प्रतीक बन गया है। गाड़ी पर एक छोटा सा निशान लगना भी लोगों को बर्दाश्त नहीं। उन्हें लगता है उनके स्टेटस पर निशान लग गया। यही विवाद का कारण बनता है।

मनोचिकित्सक की मानें तो लोगों की मानसिकता में आया यह बदलाव आर्थिक संपन्नता का नतीजा है जिसने लोगों को भौतिकवादी बना दिया है। अच्छी सोसाइटी में घर। वहां के नए माहौल में रचने बसने के लिए और आरामदायक जीवन के लिए गाडियां जरूरी हो गई हैं। ऐसे में इन्हें अपनी इंसानियत से प्यार न होकर भौतिक वस्तुओं से ज्यादा प्यार होता है।

दिल्ली की सड़कों पर तो गाड़ी चलाना खतरों से खेलने जैसा है। ट्रैफिक के नियम पालन करने की बात आती है तो हर लाल बत्ती पर इसका उल्लंघान साफ देखा जा सकता है। लोग ट्रैफिक लाइट को अनदेखा कर निकल जाते हैं। रात 11 बजे के बाद तो ट्रैफिक सिग्नल मजाक बन कर रह गए हैं। वहीं अनुशासनहीनता से भी समस्या विकराल रूप ले चुकी है। लगभग हर दिन दस लाख कारें, बस, ट्रक, स्कूटर और मोटरबाइक सड़कों पर उतरते हैं, नतीजा ट्रैफिक जाम। लोगों में आगे निकलने की होड़ उन्हें उग्र बना देती है।

सड़क पर चलते समय धैर्य बरतने का समय होता है। गाड़ी चलाने वालों को अनुशासित और सभ्य बनना होगा। ट्रैफिक नियमों का पालन करना होगा। सड़क पर बुरी से बुरी स्थिति को भी शांत मन से संभालना चाहिए। रोड रेज की समस्या तभी कम होगी जब सड़क पर चलते समय या गाड़ी चलाते समय लोग धीरज रखें। साथ में ट्रैफिक नियमों का ईमानदारी से पालन करें। सबसे बड़ी बात यह है कि समय पर घर से निकलें ताकि दफ्तर, स्टेशन या अपनी मीटिंग में सही वक्त पर पहुंच सकें। तब न तो सड़कों पर भागमभाग मचेगी और न रोड़ रेज की नौबत आएगी। अनुशासन में रहेंगे और धीरज से काम लेंगे, तो यह समस्या काबू में आ सकती है।

गरिमा बेनिवाल

सोच का करिश्मा, छू लोगे सफलताओं का शिखर

संसार सागर में रहते हुए हम रोजाना की आम जिंदगी में सैंकडों व्यक्तियों के विषय में जानकारी पाते हैं। जाहिर है कि उनमें से कुछ व्यक्ति बेहतर जिंदगी जी रहे हैं और कुछ व्यक्ति निम्न स्तर की जिंदगी जी रहे है। सवाल यह उठता है कि लोगों की जिंदगी में मध्य यह अंतर आखिर होता क्यों है। क्यों लोग सुखी और दुखी होते हैं। क्यों अमीर और गरीब होते हैं। क्यों कुछ लोग अपने जीवन पर गर्व करते हैं और क्यों कुछ लोग अपने जीवन को कोसते रहते हैं। क्या इस अंतर के लिए उनके भाग्य की भूमिका होती है। आपने देखा होगा कि ज्यादातर नाकाम लोग अपनी असफलताओं के लिए अपनी बदनसीबी को जिम्मेदार ठहराते हैं। क्या किस्मत को दोषी ठहराया जाना न्यायसंगत अथवा उचित हैं। आस्कर वाइल्ड कहते है कि आपकी बुद्धिमत्ता अथवा आपकी मूर्खता के लिए आपकी सोच ही जिम्मेदार होती है। वहीं, थियोडोर रूजवेल्ट ने कहा था कि आपने जीवन की दशा और दिशा की स्थिति के लिए आपकी सोच ही पूर्णरूप से उत्तरदायी है। सफल प्राप्ति का प्रथम मूलमंत्र यही है कि अपनी सोच को उन्नत बनाएं और स्वयं पर विश्वास करना सीखें। सोच का करिश्मा तभी आपको नजर आएगा, जब आप सतत परिक्ष्म करेंगे और अपने लक्ष्यों का निर्धारण सावधानीपूर्वक करेंगे। अपने अंतर्मन से अर्थात अपने विवेक से बात करना सीखें। आपका विवेक एक सच्चे गुरू की भांति लक्ष्य निर्धारित करने में आपकी सहायता करेगा।

हिमानी मित्तल

कैसे बनाएं जीवन में लक्ष्य!

लक्ष्यहीन व्यक्ति का जीवन वैसा ही है, जैसा सहारा के रेगिस्तान में भटकते मुसाफिर का, जिसके पास दिशाबोध हेतु कम्पास न हो। अतरू प्रत्येक मानव के जीवन में कोई न कोई लक्ष्य अवश्य ही होना चाहिए, लेकिन लक्ष्य का निर्धारण करने से पहले आप अपने अंतर्मन से बात करते हुए उसके विषय में आश्वस्त हो जाएं, अतरू अपने लक्ष्य को निम्न कसौटियों पर परख कर देखें–

1. क्या आपको लगता है कि आपके द्वारा तय किया गया लक्ष्य आपकी प्रतिभा और योग्यता के दायरे में आता है।
2. लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक खाका तैयार करें और आने वाली चुनौतियों और बाधाओं को भी उसमें स्थान प्रदान करें।
3. लक्ष्य प्राप्ति के लिए विभिन्न चरण बनाएं, जो समय आधारित हों।
4. उन कारणों की तलाश करें, जो लक्ष्य प्राप्ति में बाधा बनते नजर आ रहे हों। उन बाधाओं पर विजय पाने के लिए संतुलित योजना बनाएं और उसी के अनुसार कार्य करें।

5. लक्ष्य प्राप्त करने तक अपने प्रयासों की स्वयं समीक्षा करें और उन्हें अधिक उपयोगी बनाएं, ताकि लक्ष्य पर पहुंचने के पश्चात आप उस पर कायम भी रह सकें। लगन और परिश्रम के बल पर असंभव दिखने वाले लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सकता है।

पृथ्वी सिंह

शायद हम कभी नहीं समझेंगे मजदूर के पसीने की कीमत

यह अपने आप में कितनी आश्चर्य जनक बात है कि मानव सभ्यता की इतनी लम्बी यात्रा के बाद भी मानव की एक श्रेणी ऐसी है, जिसे हम मजदूर कहते हैं। वैसे तो ऋगवेद के पुरुष सूक्त के दसवे मंडल के अनुसार जो शारीरिक श्रम करने वाला होता है वही शूद्र कहलाता है। तो उसके प्रकाश में आज शुद्रो की संख्या ही बढ़ी है। पर ऐसा क्या है कि मानव जीवन की महत्ता बताने वाले हर धर्म अपने शूद्रों को बनाये रखना चाहते है? क्या हम सुख पाने के लिए आज भी ऐसी मानव फौज चाहते हैं, जो उतने सुख में ना रहे जितने में हम रहते हैं? जब मानव जीवन नश्वर है और बड़ी मुश्किल से मिलता है तो हम क्यों नही चाहते कि हर मनुष्य को इस बात का सुख और आनंद मिले कि उसे मानव जीवन मिला है? हम क्यों कहते हैं कि यह सब कर्मों का खेल है और इसी लिए मजदूर को नरक सा जीवन मिला है और उसे यह सब भोगना ही पड़ेगा। अगर यह दर्शन सत्य है तो फिर हममे से कोई क्यों अपने दर्द के लिए डॉक्टर, मंदिर, साधू, फकीर के पास दौड़ता है। इससे साफ जाहिर है कि वह मानता है कि कुछ भी प्रयास से बदला जा सकता है, तो क्या मानव झूठ का सहारा लेकर अपने दायित्वों से बचना चाहता है? या फिर उसे गुलाम चाहिए और मानवाधिकार के आईने में यह अब संभव नहीं है तो अभावों में रहने वाले ऐसे मनुष्यों को हमने जिन्दा रखा जिनको हम अपने सुख के लिए प्रयोग करते हैं। हर देश का कानून, संविधान और खुद लोग (समृद्ध) यह कह कर बच निकलते हैं कि वे (मजदूर) अपनी मर्जी से काम कर रहे हैं, कोई उन पर जबरदस्ती नही कर रहा है। इस लिए कोई कार्यवाही बनती ही नहीं है। एक सामान्य मनुष्य गर्मी में इतना पागल हो उठता है कि वह पैदल चलने कि सोच ही नहीं पाता और एक उसी के समान मनुष्य उतनी ही गर्मी में आपको रिक्शा में लेकर ढोता है और पसीने से लत पथ उस मनुष्य से हम अपने गंतव्य पर पहुंच कर यह भी नही पूछते कि भैया क्या प्यास तो नही लगी है। क्योकि आपके लिए तो यह उसके कर्म है जो वह भोग रहा है? कभी सोचा कि अगर सब भगवन को ही देना था तो उसने आरम्भ (60 लाख साल पहले जब पहली बार मनुष्य के साक्ष्य पृथ्वी पर मिले) के मनुष्य को नंगा, भूखा, बिना घर के क्यों रखा? क्या इस लिए कि उन सब के कर्म में यह लिखा था और आज से 10,000 साल पहले तक वह ऐसे ही रहा या फिर वह कर्म का पुजारी आपके लिए संस्कृति की वह दीवार बना रहा था जिस पर आज आप हम और ऐश कर रहे हैं। उन्ही मनुष्यों के अवशेष है यह मजदूर कहे जाने वाले मनुष्य जिनका सम्मान हम सबको इस लिए करना चाहिए क्योकि मानव संस्कृति के देवता है ये सब जो पाने को गला कर खेतो में आनाज उगाते हैं। तपती धूप में आपका घर बनाते हैं। और इसी लिए मंदिर नहीं, मस्जिद नहीं, गुरु द्वारा नहीं, गिरजा घर नही, मंदिर के देवताओं को अपने इर्द गिर्द खोजिये और उन्हें एक गिलास ठंडा पानी ही पिला दीजिये। क्योंकि भगवन तो प्रेम का भूखा है और इतना पाकर भी तृप्त हो जायेगा और समझ लेगा की अभी पृथ्वी पर उसके अवशेष में मानव शेष है। मजदूर भाई बहनों का शत–शत अभिनंदन। आज अखिल भारतीय अधिकार संगठन ने राज्य सभा में एक याचिका प्रस्तुत करके मजदूरो के बेहतर जीवन के लिए वकालत की है जो आने वाले समय में उनके लिए मील का पत्थर साबित होगी। हे पृथ्वी के श्रम देवी–देवता मेरा प्रणाम स्वीकार करो।

बालकृष्ण मिश्र

सम्पादक की कलम से

दिल्ली की सरकार चलाना टेढी खीर है

दिल्ली में एक केंद्र सरकार है जो देश चलाती है जबकि दूसरी दिल्ली राज्य की सरकार है जिसके जिम्मे छोटे से राज्य को संभालना है लेकिन इस छोटी सी सरकार के सिर पर बिग ब्रदर की भूमिका में केंद्र द्वारा नियुक्त उपराज्यपाल हैं। दिल्ली में जब से भाजपा हारी है व आम आदमी पार्टी ने सरकार बनाई है, सीएम अरविंद केजरीवाल व उपराज्यपाल नजीब जंग के बीच जंग थम नहीं रही। केजरीवाल का कहना है कि केंद्र की मोदी सरकार उपराज्यपाल के जरिए दिल्ली राज्य का शासन चलाने की कोशिश कर रही है। ऐसे में दिल्ली में चुनाव ही कयूं कराए जाते हैं। बहरहाल, नजीब जंग और केजरीवाल के बीच टकराव तब शुरू हुआ जब उपराज्यपाल ने मुख्यमंत्री से पूछे बिना कुछ अधिकारियों की नियुक्ति की। उपराज्यपाल चाहते थे कि अधिकारी उन्हें सारी फाइलें भी दिखाएं जबकि सीएम को यह मंजूर नहीं था। विवाद बढा तो केंद्र सरकार उपराज्यपाल के साथ हो गई और गृह मंत्रालय ने अधिसूचना जारी कर कहा कि उपराज्यपाल को सेवाओं, सार्वजनिक व्यवस्था, पुलिस और जमीन से जुडे मामलों में निर्णायक अधिकार होगा और वह अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए जरूरी समझें तो मुख्यमंत्री से सलाह कर सकते हैं। केजरीवाल सरकार और उपराज्यपाल के बीच अधिकार क्षेत्र को लेकर जारी टकराव के बीच कटुता का नया दौर शुरू हो गया है क्योंकि नजीब जंग ने बिहार के 5 पुलिस अधिकारियों को भ्रष्टाचार निरोधी शाखा में शामिल करने के आम आदमी पार्टी सरकार के फैसले पर सवाल उठाया है। कहने को मोदी सरकार खुद को संघवादी व्यवस्था की प्रबल समर्थक बताती रही है लेकिन पिछले दिनों केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से दिल्ली सरकार के अफसरों की नियुक्ति–तबादलों को लेकर जारी अधिसूचना ने इस मामले में उसकी कलई खोल दी है। पहले दिल्ली हाईकोर्ट ने इसे अनुचित माना जिसके बाद दिल्ली की एसेंबली में इसके खिलाफ प्रस्ताव पेश हुआ। पहली बार देखने में आया कि किसी राज्य की विधानसभा ने केंद्र के किसी एक्शन के खिलाफ सा रिएक्शन दिया हो। दिल्ली सरकार का अस्तित्व देश की संघवादी आत्मा के साथ जुडा है और अपने हक के लिए आम आदमी पार्टी को ये मसला सभी क्षेत्रीय दलों के साथ मिल कर उठाना चाहिए। याद रहे, राज्य सरकारों के भारी दबाव के बाद ही तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार ने जून 1983 में सरकारिया आयोग का गठन किया था जिसने 1988 में सौंपी सिफारिशों में राज्यों को ज्यादा संसाधन और जिम्मेदारियां देने की बात कही थी। लेकिन राज्यों के अधिकारों को लेकर केंद्र सरकारें सदा राजनीति करती रहीं। मौजूदा मोदी सरकार भी राजनीति ही कर रही है। तय है कि सीएम केजरीवाल के लिए यह एक लंबी लडाई का हिस्सा है। उनका लक्ष्य दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाना है और जब तक यह नहीं होता तब तक वह केंद्र सरकार पर बरसते रहेंगे। लेकिन यह बहुत दुखद है कि एक चुनींदा सरकार अपने तरीके से काम नहीं कर पा रही। वो मतदाताओं को किए अपने वायदे भी पूरे नहीं कर पा रही। राज्य सरकार को स्वतंत्र रूप से काम करने का अधिकार तो मिलना चाहिए।

Say No To Burn Waste Material

Tecnia Institute of Advanced Studies organized a wareness Drive on "Say No To Burn Waste Material" on wednesday, 20th May, 2015 at Tecnia Auditorium

Major objective of this event was to spread awareness among students, staff and faculty members on environment safety and also to promote message of "Say No To Burn Waste Material". By organizing this event it is felt that students' themselves came with very creative ideas and were agreed with this message to save environment by Say No To Burn Waste Materials. . It was also an eye opener for the students that Trash has more economic value and a lighter impact on climate change when reused, recycled or composted than when incinerated or placed in a landfill. The event turned out to be unique by participation of Students, Staff and Faculty members. This event was a great success as there was active participation from all faculty members and students in awareness drive. Students recorded bytes of dignitaries and faculty members on concern issue pertaining to, "Say No To Burn Waste Material" Students also participated in debate competition and expressed their views on this issue. Megha Sharma, (MCA) grabed first prize and Ashish Tyagi, (MCA) won second prize in Debate Competition. The whole event was a great success as all of us were successful to achieve the objectives.

Dr. Trishu Sharma

हिन्दी पत्रकारिता दिवस

हिंदी पत्रकारिता दिवस 30 मई को मनाया जाता है। आज ही के दिन 1826 में पंडित युगुल किशोर शुक्ल ने प्रथम हिन्दी समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन व संपादन आरम्भ किया था।उदन्त मार्तण्डश नाम उस समय की सामाजिक परिस्थितियों का संकेतक था जिसका अर्थ है– समाचार सूर्य। इस प्रकार भारत में हिंदी पत्रकारिता की आधारशिला पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने डाली थी। वे कानपुर संयुक्त प्रदेश (कानपुर उस समय एक संयुक्त प्रदेश था) के निवासी थे।

उदंत मार्तण्ड हिंदी का प्रथम समाचार पत्र था जिसका प्रकाशन 30 मई, 1826 को

कलकत्ता से एक साप्ताहिक पत्र के रूप में आरंभ हुआ था। उस समय अंग्रेजी, फारसी और बांग्ला में तो अनेक पत्र निकल रहे थे किंतु हिंदी में एक भी पत्र प्रकाशित नहीं होता था। प्रारंभिक रूप में इसकी केवल 500 प्रतियां ही मुद्रित हुई थीं पर इसके पाठक कलकत्ता से बहुत दूर होने के कारण इसका प्रकाशन लम्बे समय तक न चल सका क्योंकि उस समय कलकत्ता में हिंदी भाषियों की संख्या बहुत कम थी व डाक द्वारा भेजे जाने वाले इस पत्र के खर्चे इतने बढ़ गए कि इसे अंग्रेजों के शासन में चला पाना असंभव हो गया। अंततरू 4 दिसम्बर 1826 को इसके प्रकाशन को विराम देना पड़ा।

पिछले 184 साल में काफी चीजें बदलीं हैं। हिन्दी अखबारों के कारोबार में काफी तेजी आई है। साक्षरता बढ़ी है। पंचायत स्तर पर राजनैतिक चेतना बढ़ी है। साक्षरता बढ़ी है। इसके साथ–साथ विज्ञापन बढ़े हैं। हिन्दी के पाठक अपने अखबारों को पूरा समर्थन देते हैं। महंगा, कम पन्ने वाला और खराब कागज वाला अखबार भी वे खरीदते हैं। अंग्रेजी अखबार बेहतर कागज पर ज्यादा पन्ने वाला और कम दाम का होता है। यह उसके कारोबारी मॉडल के कारण है। आज कोई हिन्दी में 48 पेज का अखबार एक रुपए में निकाले तो दिल्ली में टाइम्स ऑफ इंडिया का बाजा भी बज जाए, पर ऐसा नहीं होगा। इसकी वजह है मीडिया प्लानर। कौन हैं ये मीडिया प्लानर? ये लोग माडिया में विज्ञापन का काम करते हैं, पर विज्ञापन देने के अलावा ये लोग मीडिया के कंटेंट को बदलने की सलाह भी देते हैं। चूंकि पैसे का इंतजाम ये लोग करते हैं, इसलिए इनकी सुनी भी जाती है। इसमें गलत कुछ नहीं। कोई भी कारोबार पैसे के बगैर नहीं चलता। पर सूचना के माध्यमों की अपनी कुछ जरूरतें भी होतीं हैं। उनकी सबसे बड़ी पूँजी उनकी साख है। यह साख ही पाठक पर प्रभाव डालती है। जब कोई पाठक या दर्शक अपने अखबार या चौनल पर भरोसा करने लगता है, तब वह उस वस्तु को खरीदने के बारे में सोचना शुरू करता है, जिसका विज्ञापन अखबार में होता है। विज्ञापन छापते वक्त भी अखबार ध्यान रखते हैं कि वह विज्ञापन

This Month

May 16, 1862 - During the American Civil War, Union General Benjamin Butler, military governor of New Orleans, issued his "Woman Order" declaring that any Southern woman showing disrespect for Union soldiers or the U.S. would be regarded as a woman of the town, or prostitute. This and other controversial acts by Butler set the stage for his dismissal as military governor in December 1862.

*****

May 20, 1862 - President Abraham Lincoln signed the Homestead Act opening millions of acres of government owned land in the West to "homesteaders" who could acquire up to 160 acres by living on the land and cultivating it for five years, paying just $1.25 per acre.

*****

May 31, 1862 - During the American Civil War, the Battle of Seven Pines occurred as Confederate General Joseph E. Johnston's Army attacked Union General George McClellan's troops in front of Richmond Virginia and nearly defeated them. Johnston was badly wounded. Confederate General Robert E. Lee then assumed command, replacing the wounded Johnston. Lee renamed his force the Army of Northern Virginia.

*****

Compilation: Ms. Honey Shah

Basics of Media

Photographic Lighting Principle - The triangular arrangement of key, back, and fill lights, with the back light opposite the camera and directly behind the object, and the key and fill lights on opposite sides of the camera and to the front and the side of the object. Also called triangle lighting.

*****

Side Light - Usually directional light coming from the side of an object. Acts as additional fill light or a second key light and provides contour.

*****

Silhouette Lighting - Unlighted objects or people in front of a brightly illuminated background.

*****

Audio - The sound portion of television and its production. Technically, the electronic reproduction of audible sound.

*****

Cardioid - Heart-shaped pickup pattern of a unidirectional microphone.

*****

Condenser Microphone - A microphone whose diaphragm consists of a condenser plate that vibrates with the sound pressure against another fixed condenser plate, called the backplate. Also called electret or capacitor microphone.

****

Compilation: Rahul Mittal

जैसा लगे। सम्पादकीय विभाग विज्ञापन से अपनी दूरी रखते हैं। यह एक मान्य परम्परा है। मार्केटिंग के महारथी अंग्रेजीदां भी हैं। वे अंग्रेजी अखबारों को बेहतर कारोबार देते हैं। इस वजह से अंग्रेजी के अखबार सामग्री संकलन पर ज्यादा पैसा खर्च कर सकते हैं। यह भी एक वात्याचक्र है। चूंकि अंग्रेजी का कारोबार भारतीय भाषाओं के कारोबार के दुगने से भी ज्यादा है, इसलिए उसे बैठने से रोकना भी है। हिन्दी के अखबार दुबले इसलिए नहीं हैं कि बाजार नहीं चाहता। ये महारथी एक मौके पर बाजार का बाजा बजाते हैं और दूसरे मौके पर मोनोपली यानी इजारेदारी बनाए रखने वाली हरकतें भी करते हैं। खुले बाजार का गाना गाते हैं और जब पत्रकार एक अखबार छोड़कर दूसरी जगह जाने लगे तो एंटी पोचिंग समझौते करने लगते हैं। पिछले कुछ समय से अखबार इस मर्यादा रेखा की अनदेखी कर रहे हैं। टीवी के पास तो अपने मर्यादा मूल्य हैं ही नहीं। वे उन्हें बना भी नहीं रहे हैं। मीडिया को निष्पक्षता, निर्भीकता, वस्तुनिष्ठता और सत्यनिष्ठा जैसे कुछ मूल्यों से खुद को बाँधना चाहिए। ऐसा करने पर वह सनसनीखेज नहीं होता, दूसरों के व्यक्तिगत जीवन में नहीं झाँकेगा और तथ्यों को तोड़े–मरोड़ेगा नहीं। यह एक लम्बी सूची है। एकबार इस मर्यादा रेखा की अनदेखी होते ही हम दूसरी और गलतियाँ करने लगते हैं। हम उन विषयों को भूल जाते हैं जो हमारे दायरे में हैं।

मार्केटिंग का सिद्धांत है कि छा जाओ और किसी चीज को इस तरह पेश करो कि व्यक्ति ललचा जाए। ललचाना, लुभाना, सपने दिखाना मार्केटिंग का मंत्र है। जो नही है उसका सपना दिखाना। पत्रकारिता का मंत्र है, कोई कुछ छिपा रहा है तो उसे सामने लाना। यह मंत्र विज्ञापन के मंत्र के विपरीत है। विज्ञापन का मंत्र है, झूठ बात को सच बनाना। पत्रकारिता का लक्ष्य है सच को सामने लाना। इस दौर में सच पर झूठ हावी है। इसीलिए विज्ञापन लिखने वाले को खबर लिखने वाले से बेहतर पैसा मिलता है। उसकी बात ज्यादा सुनी जाती है। और बेहतर प्रतिभावान उसी दिशा में जाते हैं। आखिर उन्हे जीविका चलानी है। अखबार अपने मूल्यों पर टिकें तो उतने मजेदार नहीं होंगे, जितने होना चाहते हैं। जैसे ही वे समस्याओं की तह पर जाएंगे उनमें संजीदगी आएगी। दुर्भाग्य है कि हिन्दी पत्रकार की ट्रेनिंग में कमी थी, बेहतर छात्र इंजीनियरी और मैनेजमेंट वगैरह पढ़ने चले जाते हैं। ऊपर से अखबारों के संचालकों के मन में अपनी पूँजी के रिटर्न की फिक्र है। वे भी संजीदा मसलों को नहीं समझते। यों जैसे भी थे, अखबारों के परम्परागत मैनेजर कुछ बातों को समझते थे। उन्हें हटाने की होड़ लगी। अब के मैनेजर अलग–अलग उद्योगों से आ रहे हैं। उन्हें पत्रकारिता के मूल्यों–मर्यादाओं का ऐहसास नहीं है।

अखबार शायद न रहें, पर पत्रकारिता रहेगी। सूचना की जरूरत हमेशा होगी। सूचना चटपटी चाट नहीं है। यह बात पूरे समाज को समझनी चाहिए। इस सूचना के सहारे हमारी पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था खड़ी होती है। अक्सर वह स्वाद में बेमजा भी होती है। हमारे सामने चुनौती यह थी कि हम उसे सामान्य पाठक को समझाने लायक रोचक भी बनाते, पर वह हो नहीं सका। उसकी जगह कचरे का बॉम्बार्डमेंट शुरू हो गया। इसके अलावा एक तरह का पाखंड भी सामने आया है। हिन्दी के अखबार अपना प्रसार बढ़ाते वक्त दुनियाभर की बातें कहते हैं, पर अंदर अखबार बनाते वक्त कहते हैं, जो बिकेगा वहीं देंगे। चूंकि बिकने लायक सार्थक और दमदार चीज बनाने में मेहनत लगती है, समय लगता है। उसके लिए पर्याप्त अध्ययन की जरूरत भी होती है। वह हम करना नहीं चाहते। या कर नहीं पाते। चटनी बनाना आसान है। कम खर्च में स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन बनाना मुश्किल है। चटपटी चीजें पेट खराब करतीं हैं। इसे हम समझते हैं, पर खाते वक्त भूल जाते हैं। हमारे मीडिया मे विस्फोट हो रहा है। उसपर जिम्मेदारी भारी है, पर वह इसपर ध्यान नहीं दे रहा। मैं वर्तमान के प्रति नकारात्मक नहीं सोचता और न वर्तमान पीढ़ी से मुझे शिकायत है, पर कुछ जरूरी बातों की अनदेखी से निराशा है।

बालकृष्ण मिश्र

Vol. 11 **No.** 5
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News
under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"We are not retreating - we are advancing in another Direction."

General Douglas MacArthur

*****

"If you were plowing a field, which would you rather use? Two strong oxen or 1024 chickens?"

Seymour Cray

*****

"Your Highness, I have no need of this hypothesis."

Pierre Laplace

*****

"The man who does not read good books has no advantage over the man who cannot read them."

Mark Twain

*****

"The truth is more important than the facts."

Frank Lloyd Wright

*****

"There are only two tragedies in life: one is not getting what one wants, and the other is getting it."

Oscar Wilde

*****

Compilation: Ms. Bhavna Madan Vij

Winners V/s Loosers

Part-46

Winners work hard. Losers avoid work.

*****

Winners give their best for the things that they decide to do. Losers work half heartedly in everything that they do.

*****

Winners are persistent and will do whatever it takes (ethical means) to achieve their goal. Losers give up when obstacles pop up.

*****

Winners dream in the day. Losers dream in bed.

*****

Winners think about possibilities. Losers focus on obstacles that will stop them from achieving.

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster@tecnia.in